9 अगस्त, 2017 को भारत छोड़ो आन्दोलन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर लोक सभा में माननीय लोक सभा अध्यक्ष द्वारा संबोधन

———

1. भारत की आजादी के 70 वर्ष पूर्ण होने एवं स्वतंत्रता संघर्ष के सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' के 75 वर्ष पूर्ण होने पर उन क्षणों को सभा के सभी सदस्यों एवं समस्त देशवासियों के साथ पुनः स्मरण करते हुए मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है।

2. हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में सन् 1942 में इसी दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक **''भारत छोड़ो आन्दोलन''** शुरु करने का आह्वान करते हुए भारत से अंग्रेजों की सुव्यवस्थित वापसी की मांग की, जिसने विदेशी हुकूमत की नींव हिला दी जिसके कारण हम विदेशी शासन से अपनी मातृभूमि को आज़ाद करा सकें। यद्यपि, भारत छोड़ो आन्दोलन स्वतंत्रता से पूर्व अन्तिम आन्दोलन था, पर भारत में स्वतंत्रता के लिए किए गए आन्दोलनों का इतिहास बहुत लम्बा है।

3 यह सच है कि एक समय भारत में ब्रिटिश की हुकूमत हो गई थी, पर इससे बड़ा सच यह है कि पहले दिन से ही भारत को स्वतंत्र कराने के प्रयास आरंभ हो गए थे। जहां ब्रिटिश अपनी औपनिवेशिक (colonial) सत्ता का आनंद ले रहे थे, वहीं स्थानीय शासक, किसान, बुद्धिजीवी, आम जनता एवं विभिन्न राज्यों के सैनिकों के मन में स्वराज्य की भावना उमड़ रही थी। जगह–जगह विदेशी शासन के खिलाफ विभिन्न रूपों में जनाक्रोश झलकता था। इस परचक्र के खिलाफ सतत्

आक्रोश फूट रहा था। इनमें उड़ीसा का पाइक विद्रोह, स्वाधीनता की मशाल बनने को आतुर था। दक्षिण भारत में धीरान चिन्नमलई, कट्टोबोममान, झारखंड के संथाल विद्रोह के बारे में सबने सुना है। राम सिंह कुका भी इनमें से एक थे।

4. महान स्वतंत्रता सेनानियों को तो सब लोग जानते हैं, परंतु ऐसे अनेक स्वतंत्रता सेनानी भी हुए हैं जिनके बारे में लोग कम जानते हैं, जैसे महाराष्ट्र में बाबू गेनू, उनके पहले वासुदेव बलवन्त फड़के, कर्नाटक की कित्तूर रानी चेन्नम्मा, श्यामजी कृष्ण वर्मा, पूर्ववर्ती बंगाल की मतंगिनी हाजरा और नागालैंड की रानी गाईदिन्ल्यु। ये तो कुछ ही नाम हैं, ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिए लेकिन गुमनाम रहे।

5. महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक का घोष वाक्य **''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूंगा,**'' तथा गांधी जी का कथन "Let every Indian consider himself to be a free man," जो उन्होंने अगस्त क्रांति के समय दिया; से समझ आता है कि कैसे जगह–जगह हो रहे छोटे–छोटे आन्दोलन को समेटकर एक राष्ट्रव्यापी आह्वान 1942 में हुआ। **''भारत छोड़ो आन्दोलन'' ने 'करेंगे या मरेंगे' का नारा देकर स्वतंत्रता की इस लड़ाई को गति भी दी**। यह एक ऐसा आन्दोलन था जब अंग्रेजों को एहसास हो गया कि अब भारत में राज करना सम्भव नहीं है।

6. मैं पटना के सचिवालय में तिरंगा फहराने वाले उन वीर शहीदों के साहस, आत्मत्याग और बलिदान का स्मरण करते हुए अत्यन्त द्रवीभूत हूं जिन्होंने ब्रिटिश पुलिस की गोलियों की परवाह न करते हुए सचिवालय पर तिरंगा फहराकर भारत की स्वतंत्रता की पूर्व उद्घोषणा कर दी थी। ऐसी ही साहसिक घटनाएं देश के अन्य शहरों जैसे मुंगेर, मुर्शिदाबाद, सतारा, बलिया एवं अन्य छोटे शहरों मे हुई एवं कई इलाकों ने अपने आपको ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र घोषित कर दिया।

7. 8 अगस्त 1942 की देर शाम मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान की बैठक में ''भारत छोड़ो आन्दोलन प्रस्ताव पेश हुआ। उसी रात्रि को ''अंग्रेजों भारत छोड़ो'' के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से मुहर लग गई। 90 मिनट के अपने भाषण में महात्मा गांधी ने स्पष्ट कर दिया था कि ''करेंगे या मरेंगे''। ब्रिटिश सरकार ने आधी रात में एक के बाद एक धड़–पकड़ शुरू की। व्यापक गिरफ्तारियों से राष्ट्र हतप्रभ रह गया किन्तु मृत नहीं हुआ।

8. भारत छोड़ो आन्दोलन की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि इस आन्दोलन ने देश के बुद्धिजीवी वर्ग के साथ–साथ, गांव–देहात के करोड़ों किसानों, मजदूरों और नौजवानों की चेतना को झकझोरा एवं उनको प्रत्यक्ष रूप से इस स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा।

9. आज हम सब ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' में शहीद हुए उन बेनाम वीरों को भी श्रद्धांजलि देते हैं जिनके हृदय में देशभक्ति की सदा–सर्वदा

प्रज्ज्वलित होने वाली मशाल जलती थी, जिनकी आंखों में स्वतंत्र नव भारत के सपने थे।

10. उन वीरों, महापुरुषों एवं संतात्माओं के दृष्टिकोण को समझने, अपनाने, एवं उनका प्रचार–प्रसार करने का पुनीत कर्त्तव्य भी हम सभी का है।

11. जिस जोश, साहस, संकल्प, आस्था, दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास के साथ हमने आज़ादी पाई थी, उन्हीं गुणों को पुनः आत्मसात करके हम हमारे सपनों का सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सशक्त, समृद्ध एवं विश्वस्तरीय भारत बना सकते हैं।

12. **हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने तब कहा था ''भारत छोड़ो''। अब हमें भारत जोड़ो आन्दोलन की जरूरत है**। एक ऐसा आन्दोलन जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश के सभी हिस्सों में चलाया जाए ताकि हम एक सबल और संगठित भारत का निर्माण कर सकें। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें समावेशी विकास हो। हमें विकास के लाभों को देश के सभी भागों तक पहुंचाना है और अभाव को दूर करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। महात्मा गांधी जी ने कहा था – निर्धनतम वर्ग की ओर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए, जिसे एक प्रकार से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने दोहराया था कि पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना और विकास पहुंचाना है। यह अन्त्योदय की कल्पना है।

13. लोकमान्य तिलक ने कहा था कि ''स्वराज्य माझा जन्मसिद्ध अधिकार आहे तो मी मिळवीनच। अब यह भी कहना आवश्यक है कि ''सुराज मेरा परम कर्त्तव्य है और मैं उसे पूरा करूंगा ही।''

जय हिन्द।